भाऊराव महंत

गर्द मेरे रूप पर छाया हुआ था।
दोष लेकिन आइने को दे रहा था।

हाँ, कभी धोया नहीं चेहरे को मैंने,
आइने को पोंछता रहता सदा था।

देख भी पाया नहीं हूँ मैं कभी-भी
गंदगी से जो मेरा ये मन भरा था।

दोष ही बस दोष था मेरे जहन में,
सोचता मैं रह गया सबसे भला था।

हो गया अच्छा तो सारे दोस्त छूटे,
जब बुरा था, साथ मेरे काफ़िला था

देखते ही फायदा अपना हमेशा,
काट देता औरों का मैं तो गला था।

गौर से देखा जो अपने आपको जब,
अब लगा मुझको कि मैं कितना बुरा था।

चूर मद में हो गए हैं आज सब इंसान।
दम्भ के पाखण्ड से अब बन गए हैवान।

द्वेष-छल-चालाकियाँ नित, कर रहे हैं सब,
खो गई इंसानियत भी खो गया ईमान।

आचरण की सभ्यता की अब नहीं क़ीमत,
शिष्टता अंतःकरण को, कर गई सुनसान।

हर गली हर चौक पर अब भेड़िए दिखते,
अब कहाँ जाएँ बचाने, बेटियाँ सम्मान।

राजनैतिक हस्तियों के हाथ जिन पर हो,
वो भला फिर क्यों करेंगे धृष्टता का दान।

ज़ालिमाना क़त्ल, हिंसा और ये दंगे,
पृष्ठ पर अख़बार के हैं रोज़ के तूफ़ान।

पास जिनके राजनैतिक शक्तियाँ होतीं,
सत्य में वह व्यक्ति ही तो है बड़ा बलवान।।

ज़माने को मुझे उल्लू बनाना भी नहीं आता।
बिना मतलब किसी को ही सताना भी नहीं आता।

अगर दोषी भी' हो कोई, मुझे मालूम भी हो तो,
मुझे तो दोष औरों पर लगाना भी नहीं आता।

बड़ा ही नासमझ हूँ मैं समझ आता नहीं कुछ भी,
ज़माने को समझदारी दिखाना भी नहीं आता।

स्वयं होता दुखी लेकिन न औरों को सताता मैं,
मुझे सच में किसी का दिल दुखाना भी नहीं आता।

अचानक भूल हो जाती, कोई जब काम करता हूँ,
मगर उन गलतियों को तो छुपाना भी नहीं आता।

कई लोगों को' देखा है, किया करते बुराई हैं,
मुझे आरोप का कीचड़ उठाना भी नहीं आता।

दुखी आँखों को जब देखूँ, दुखी होता स्वयं मैं भी,
करूँ कैसे उन्हें मैं ख़ुश हँसाना भी नहीं आता।

बालाघाट, मध्यप्रदेश

ISSN:2583-8849